सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

अवसर
4

निःशुल्क वितरण हेतु

शिक्षकों से बातचीत

शिक्षा प्राप्त करना सभी का संवैधानिक अधिकार है। यह अपेक्षा रहती है कि सभी बच्चे औपचारिक रूप से शिक्षित होने के लिए विद्यालय में नामांकित हों और शिक्षा ग्रहण करें। भिन्न विशेषता वाले बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भौतिक संसाधन, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों में अपेक्षित बदलाव करते हुए समावेशी वातावरण व क्रिया-कलाप को भी अपनाया जा रहा है। बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के भाषायी दक्षता विकास के लिए हम सभी को उनकी क्षमता के अनुरूप पाठ्यक्रम व शिक्षण के तरीको को अपनाने की आवश्यकता है, जिससे वे सहज और सरल तरीके से भाषा विकास से जुड़ी गतिविधियों में प्रतिभाग कर सकें। चिंतन, चुनौती एवं रूचि को ध्यान में रखकर किये गये प्रयास सार्थक परिणाम देंगे।

बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है-

१ एक साथ कई जानकारियों को प्रदर्शित न किया जाय।

२ आरम्भिक बातचीत के दौरान उनकी क्षमता व विशेषता का आकलन/मूल्यांकन को संदर्भ में लिया जाय।

३ विषयवस्तु को समझाने के लिए यथासम्भव मूर्त वस्तुओं का उपयोग किया जाय।

४ अधिगम सम्प्राप्ति का मूल्यांकन सतत् रूप से करते हुए विषयवस्तु/शिक्षण बिंदु को विस्तार दिया जाय। शिक्षण अधिगत सामग्री का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखा जाय कि चित्रों का आकार बड़ा व स्पष्ट हो। कई रंगों का प्रयोग एक साथ न हो।

५ छोटी-छोटी कविता एवं कहानियों को सुनाया जाय। अधिक से अधिक २ या ३ पात्रों वाली कहानी जो किसी समस्या का समाधान कर रही हो या कोई संदेश दे रही हो, को सुनाया जा सकता है।

६ पठन हेतु निर्धारित वर्ण एवं शब्द को बोल्ड फॉन्ट में प्रयोग किया जाय।

७ बच्चों के सभी प्रयासों पर पुनर्बलन अवश्य दिया जाय।

८ भावात्मक रूप से जुड़ाव इन बच्चों के अधिगम सम्प्राप्ति को बढ़ाने में मदद करता है।

९ प्रत्येक बच्चे की प्रगति/उपलब्धि का आकलन उसके उपलब्धि के सापेक्ष किया जाय।

१० पाठ्य वस्तु को छोटे-छोटे भागों/चरणों में विभक्त कर शिक्षण कार्य किया जाय।

११ भाषायी दक्षता विकास हेतु दृश्य-श्रव्य सामग्री का भी प्रयोग किया जा सकता है।

बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के साथ कार्य करते समय धैर्य एवं विभिन्न तकनीकों के प्रयोग की आवश्यकता होती है।

आप से यह अपेक्षा है कि आप बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते हुए उपर्युक्त बातों को भी ध्यान में रखते हुए सफलतापूर्वक लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद्

अवसर—4

नाम : ______________________________

माता का नाम : ______________________________

पिता का नाम : ______________________________

विद्यालय का नाम: ______________________________

पता : ______________________________

निःशुल्क वितरण हेतु

मुख्य संरक्षक : श्रीमती रेणुका कुमार, अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश।

संरक्षक : श्री विजय किरन आनन्द, महानिदेशक (स्कूल शिक्षा) उ0प्र0 तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ0प्र0 सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उ0प्र0, लखनऊ।

समन्वयन : श्रीमती ऋचा जोशी, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।
विशेष समन्वयन : श्रीमती चन्दना रामइकबाल यादव, निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।

समीक्षा : श्री अजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ, श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ,।

परामर्श : प्रो0 वशिष्ठ अनूप (हिंदी विभाग) काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी, डॉ0 आर0 ए0 जोसेफ, निदेशक, विकलांग समाकलन संस्थान, करौंदी वाराणसी, डॉ0 आशीष कुमार गुप्ता, एसो0 प्रो0, काशी हिन्दू वि0वि0 वाराणसी, डॉ0 उदयन मिश्रा, एसो0 प्रो0, मनोविज्ञान विभाग हरिश्चन्द्र पी0जी0 कॉलेज, वाराणसी, डॉ0 विनीता, असि0 प्रो0, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी,

संपादन : श्रीमती नीलम यादव, डॉ0 अमरजीत, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।

लेखन : श्रीमती रेखा वर्मा, श्रीमती नमिता सिंह, श्रीमती रत्नेश कुमारी पाण्डेय, श्री अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता, डॉ0 कुँवर भगत सिंह, श्रीमती अर्चना सिंह, श्रीमती अनीता शुक्ला, श्रीमती सुमन पाण्डेय, स0 अ0 बेसिक, श्री श्यामलाल पटेल, श्री पवन कुमार, श्री रवि प्रकाश सत्ये, श्री उदय प्रताप सिंह, श्रीमती निधि विश्वास, श्रीमती अंजना श्रीवास्तव, डॉ0 नीला विशालक्ष्मी बापट्ला, बौद्धिक दिव्यांगता से संबंधित विशेषज्ञ श्रीमती उषा कुशवाहा, श्रीमती पुष्पा देवी, श्रीमती नीलू सिंह, श्रीमती आभा देवी, इन्टीरेण्ट टीचर बेसिक ।

चित्रांकन : श्री संजय यादव, श्री अखिलेश कुमार गौतम, सरिता पटेल, श्रीमती प्रज्ञा श्रीवास्तव, श्री सुनील कुमार, श्री ज्ञान प्रकाश कुशवाहा, शालिनी सिंह, कु0 कुसुम, श्री ईश्वर दयाल, श्री आनंद, श्री सुभाष चन्द्र, श्री अजीत कुमार।

कम्प्यूटर ले–आउट : श्री मनोज कुमार यादव, श्री विनय कुमार, श्री अजीत कुमार कौशल।
आभार : पाठ्यपुस्तक के विकास में विभिन्न संस्थाओं की पाठ्य–सामग्री/साहित्य का उपयोग किया गया है। हम उन सभी के प्रति आभारी हैं।

मुद्रक एवं प्रकाशक :

संस्करण :

शिक्षा सत्र : 2020–2021

उत्पादन : पाठ्य पुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उ0प्र0।
© उत्तर प्रदेश शासन।

प्राक्कथन

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 सभी बच्चों को पढ़ने–लिखने का अवसर प्रदान करता है। पाठ्यपुस्तकें सीखने–सिखाने का सबसे सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण साधन हैं। बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों के दैनिक व सामाजिक व्यवहार सामान्य बच्चों से अलग होते हैं। उनके सीखने की क्षमता अन्य बच्चों से धीमी व अलग होती है। ऐसी स्थिति में बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम–2016 के सिद्धान्तों के दृष्टिगत इन बच्चों को विद्यालयी शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु पाठ्यपुस्तक का विकास किया गया है। यह पुस्तक बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के साथ–साथ उनके अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है।

बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों में सीखने की गति, संवेगात्मक विकास, बौद्धिक कार्य व व्यवहार में अनुकूलन की क्षमता कम होती है। सभी बौद्धिक दिव्यांग बच्चे एक जैसे नहीं होते हैं तथा अधिगम अक्षमता में प्रशिक्षण के द्वारा सुधार लाया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षण एवं प्रशिक्षण हेतु योग्य बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को सिखाने में माता–पिता, अभिभावकों एवं सेवादाताओं को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह पुस्तक उन अभिभावकों एवं संरक्षकों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी, जो बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को दैनिक एवं व्यावहारिक जीवन के क्रियाकलापों में आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं।

पुस्तक में दैनिक जीवन में उपयोगी क्रियाकलापों, आसपास के परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं की पहचान व उपयोग, परिवार व अन्य संबंधियों की पहचान, विभिन्न प्रकार की भावनाएँ प्रदर्शित करना आदि विषयों को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तकों की भाषा अत्यन्त सरल है तथा बच्चों के बौद्धिक स्तर तथा उनकी क्षमता के अनुरूप विकसित की गयी है। पुस्तक में निहित सामग्री के संप्रेषण विधि अत्यन्त साधारण व सरल है। पुस्तक के विकास में उन कौशलों एवं दक्षताओं को ध्यान में रखा गया है जो कक्षा–4 लिए अपेक्षित हैं।

इस पाठ्यसामग्री को विकसित करने में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, के विशेषज्ञों, निदेशक,राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी के शोध प्रवक्ताओं, बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों तथा विशेष रूप से बौद्धिक दिव्यांग बच्चों हेतु स्थापित संस्थानों में कार्य करने वाले शिक्षकों को साधुवाद देता हूँ।

हमें यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों में अपेक्षित जीवन कौशल के साथ–साथ अपेक्षित भाषायी दक्षता के विकास में भी सहायक होगी।

अप्रैल 2020

डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह
शिक्षा निदेशक (बेसिक)
एवं
अध्यक्ष, उ0प्र0 बेसिक शिक्षा परिषद्

पाठ्यक्रम

सुनना	आस–पास की वस्तुओं, घटनाओं को देखकर समझना व सुनकर अपने अनुभवों से जोड़ना। विषयवस्तु में निहित तथ्यों, विचारों, निर्देशों, भावों एवं घटनाओं को सुनकर समझना। कुछ वर्णों की ध्वनियों जैसे– ढ ढ़, ड ड़, छ–क्ष को ध्यानपूर्वक सुनना। गीत/कविता/कहानी सुनकर आनंदानुभूति करना।
बोलना	दूसरों के विचारों को सुनकर/अस्पष्ट व्यक्त करना। गीत, कविता एवं कहानी को उतार–चढ़ाव व हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन करना। परिवेशीय वस्तुओं पर स्वतंत्र बातचीत करना।
पढ़ना	मात्रिक व अमात्रिक शब्दों को चित्र के साथ जोड़कर पढ़ना चित्र, चित्र कथा, कहानी, घटना आदि को समझकर पढ़ना।
लिखना	क्ष, त्र, क्ष, ज्ञ वर्णों को लिखना। (अ से ज्ञ तक की पुनरावृत्ति) मात्रिक/अमात्रिक दो, तीन, चार वर्णों वाले शब्दों को देखकर लिखना।

शिक्षण संबंधी परिणाम

बच्चे–

- अपने व अपने परिवार के बारे में बातचीत करते हैं।
- अपने आस–पास की वस्तुओं के साथ अपने अनुभव जोड़ते हुए प्रतिक्रिया देते हैं।
- व्यक्तिगत साफ–सफाई पर ध्यान देते हैं तथा अपने कार्यों को व्यवस्थित रूप से करने का प्रयास करते हैं।
- कविता/कहानी के माध्यम से भावों को समझकर अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।
- अपने आस–पास की घटनाओं/परिदृश्यों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- दैनिक क्रियाएँ जैसे– जूते–मोजे उतारना और पहनना जानते हैं।
- संयुक्त व्यंजनों (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) का उच्चारण करते हैं व इन वर्णों को लिखते हैं।
- ड–ड़, ढ–ढ़, छ–क्ष वाले शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए पढ़ते हैं।
- आ (ा) से अं (ं) तक मात्रा वाले शब्दों को पढ़ते हैं तथा लिखते हैं।
- शरीर के अंगों के नाम बताते हैं।
- दिनों के नाम बताते हैं।
- रास्ता ढूँढ़ने एवं कागज मोड़कर आकृति बनाने जैसा क्रियाकलाप करते हैं।
- संयुक्ताक्षर वाले शब्दों जैसे–पत्ता, कुत्ता, पुस्तक, मक्खी आदि को पढ़ लेते हैं।

विषय सूची

पाठ सं0	पाठ का नाम		पृष्ठ सं0
	प्रार्थना		8
1	मुझसे मिलिए		9
2	दैनिक क्रियाएँ		10
	सीख	कविता	11
3	आओ गाएँ और लिखें		12—15
	आओ लिखें		13
	आओ दोहराएँ		14
	करके सीखें		15
4	मीठा आम		16
5	सुनों, देखो और पढ़ो (ड, ड़)		17—19
	ढ, ढ़		18
	छ, क्ष		19
6	चूहा और केक	कहानी	20—21
7	पढ़ो और लिखो (आ की मात्रा)		22—26
	इ की मात्रा		23
	ई की मात्रा		24
	मिलान करो		25
	करके सीखो		26
8	जानें इनकी बोली	कविता	27
9	पढ़ो और लिखो (उ की मात्रा)		28—34
	ऊ की मात्रा		29
	ऋ की मात्रा		30
	ए की मात्रा		31

	ऐ की मात्रा		32
	मिलान करो		33
	रंग भरो		34
10	उपकार	कहानी	35–37
11	पढ़ो और लिखो (ओ की मात्रा)		38–39
	(औ की मात्रा)		39
12	शरीर के अंग		40
13	चालाक लोमड़ी		41–42
14	पढ़ो और लिखो		43–48
	अनुस्वार का प्रयोग		43
	विसर्ग का प्रयोग		44
	मिलान करो		45
	हमने सीखा (खाली स्थान भरो)		46–48
15	दिनों के नाम		49–50
	मिलान करो		50
16	रास्ता खोजो		51
	देखो और बोलो		52
	अन्तर ढूंढो		53
17	खेल–खेल में		54
18	मेढक और चूहा		55–56

प्रार्थना

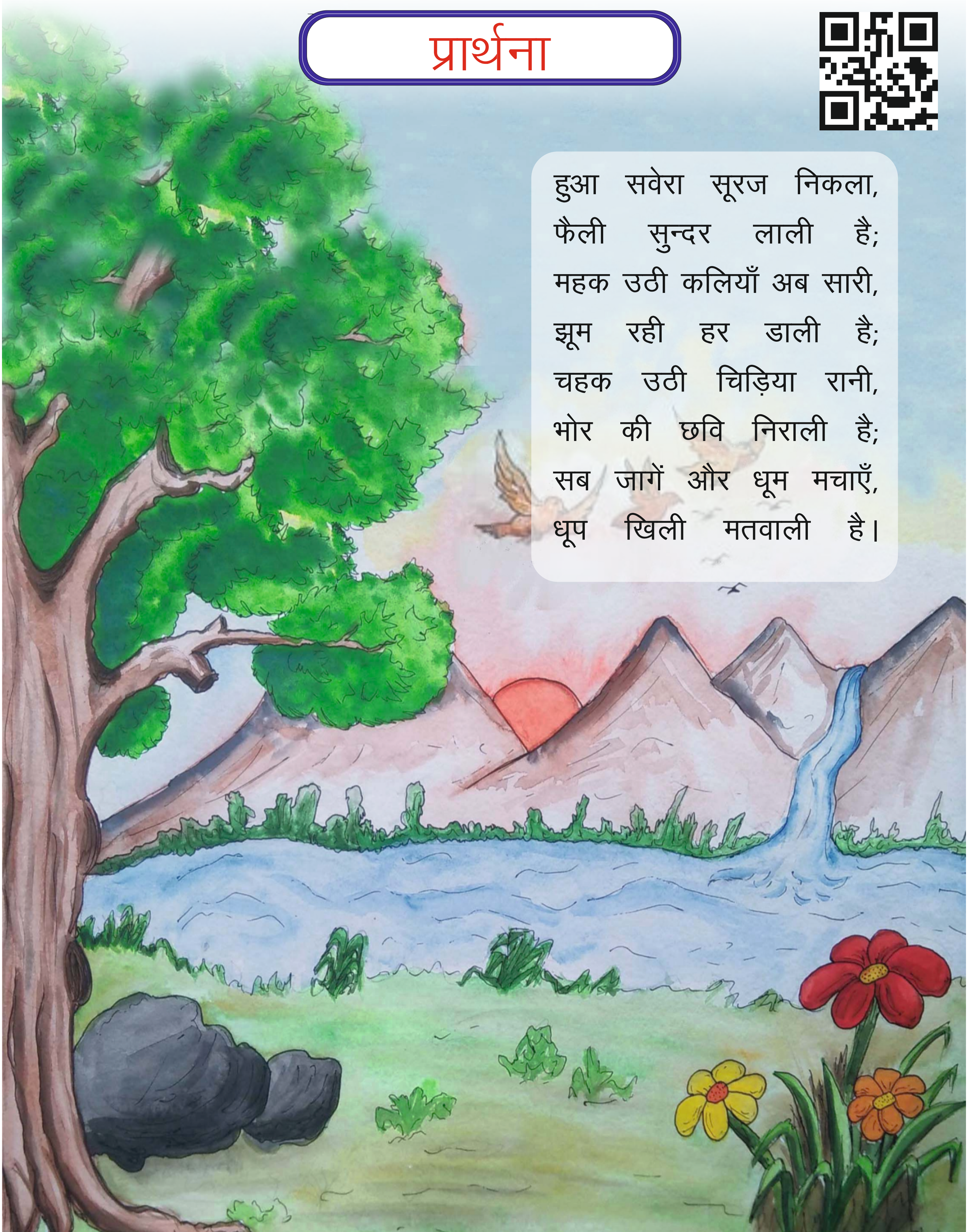

हुआ सवेरा सूरज निकला,
फैली सुन्दर लाली है;
महक उठी कलियाँ अब सारी,
झूम रही हर डाली है;
चहक उठी चिड़िया रानी,
भोर की छवि निराली है;
सब जागें और धूम मचाएँ,
धूप खिली मतवाली है।

शिक्षण संकेत

बच्चों से कविता का सस्वर वाचन हाव–भाव के साथ कराएँ तथा सुबह के दृश्य के बारे में बातचीत करें और सुबह उठने से होने वाले स्वास्थ्य लाभ के बारे में चर्चा करें।

पाठ 1

मुझसे मिलिए

छात्र/छात्रा का
फोटो चिपकाएँ

मेरा नाम .... है।

मेरी माता का नाम .... है।

मेरे पिता का नाम .... है।

मैं कक्षा .... में पढ़ती/पढ़ता हूँ।

मेरे गाँव/शहर का नाम .... है।

शिक्षण संकेत

बच्चों से संबंधित जानकारी रिक्त स्थानों में भरवाएँ।
लिखी हुई जानकारी को बोलने का अभ्यास कराएँ।

पाठ 2

दैनिक क्रियाएँ

जूते–मोजे उतारना और पहनना

शिक्षण संकेत

- जूते–मोजे उतारना और पहनना तथा जूते का फीता बाँधने के अभ्यास में वह बच्चा जो पूर्णतया सीख गया हो उससे उतारने व पहनने की क्रिया करवाकर अन्य बच्चे से अनुकरण करवाएँ तथा अभिभावक को भी बताएँ कि वे यह अभ्यास घर पर बार–बार करवाएँ।
- फीते तथा वेलक्रो वाले जूते (विशिष्ट बच्चे के लिए वेलक्रो वाले जूतों का प्रयोग करना आसान होता है) को उतारने/पहनने का अभ्यास कराएँ।
- चित्र के आधार पर बच्चों से बातचीत करें। जूते–मोजे पहनने की प्रक्रिया स्वयं भी करके प्रदर्शित करें।

सीख

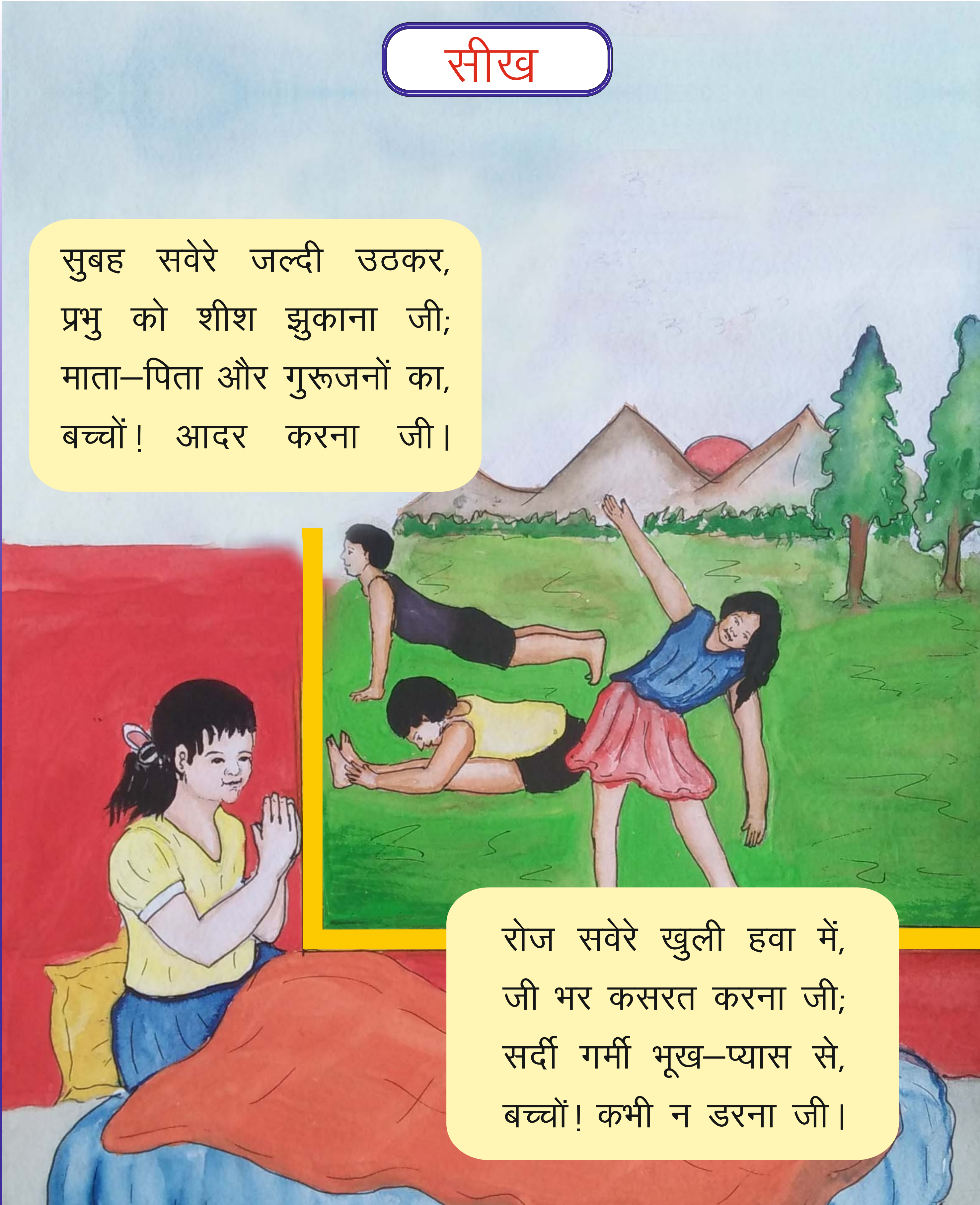

सुबह सवेरे जल्दी उठकर,
प्रभु को शीश झुकाना जी;
माता–पिता और गुरूजनों का,
बच्चों! आदर करना जी।

रोज सवेरे खुली हवा में,
जी भर कसरत करना जी;
सर्दी गर्मी भूख–प्यास से,
बच्चों! कभी न डरना जी।

शिक्षण संकेत

- बच्चों से उचित लय और हाव–भाव से कविता का सस्वर वाचन कराएँ।
- बच्चों से उनकी दिनचर्या पर बात–चीत करें तथा सामान्य शिष्टाचार की जानकारी दें।

आओ गाएँ और लिखें

क्षमा करो प्रभु
बालक जान

क्ष
क्षमा

त्रिभुज की हम
कर लें पहचान

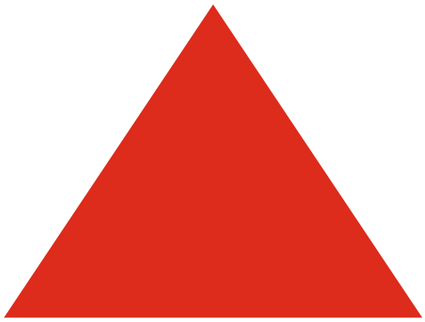

त्र
त्रिभुज

ज्ञानी देते हमको ज्ञान

ज्ञ
ज्ञानी

श्रम का सदा करो सम्मान

श्र
श्रम

शिक्षण संकेत संयुक्त व्यंजनों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराएँ।

आओ लिखें

क्ष	क्ष	क्ष	क्ष
त्र	त्र	त्र	त्र
ज्ञ	ज्ञ	ज्ञ	ज्ञ
श्र	श्र	श्र	श्र

शिक्षण संकेत

संयुक्त व्यंजन की आकृति पर पहले अंगुली फिरवाएँ। पुनः बिन्दुओं को मिलाते हुए संयुक्त व्यंजन लिखने का अभ्यास कराएँ।

आओ दोहराएँ

वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	
ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
क्ष	त्र	ज्ञ		

शिक्षण संकेत बच्चों से वर्णों को बोलने का अभ्यास कराएँ।

करके सीखें

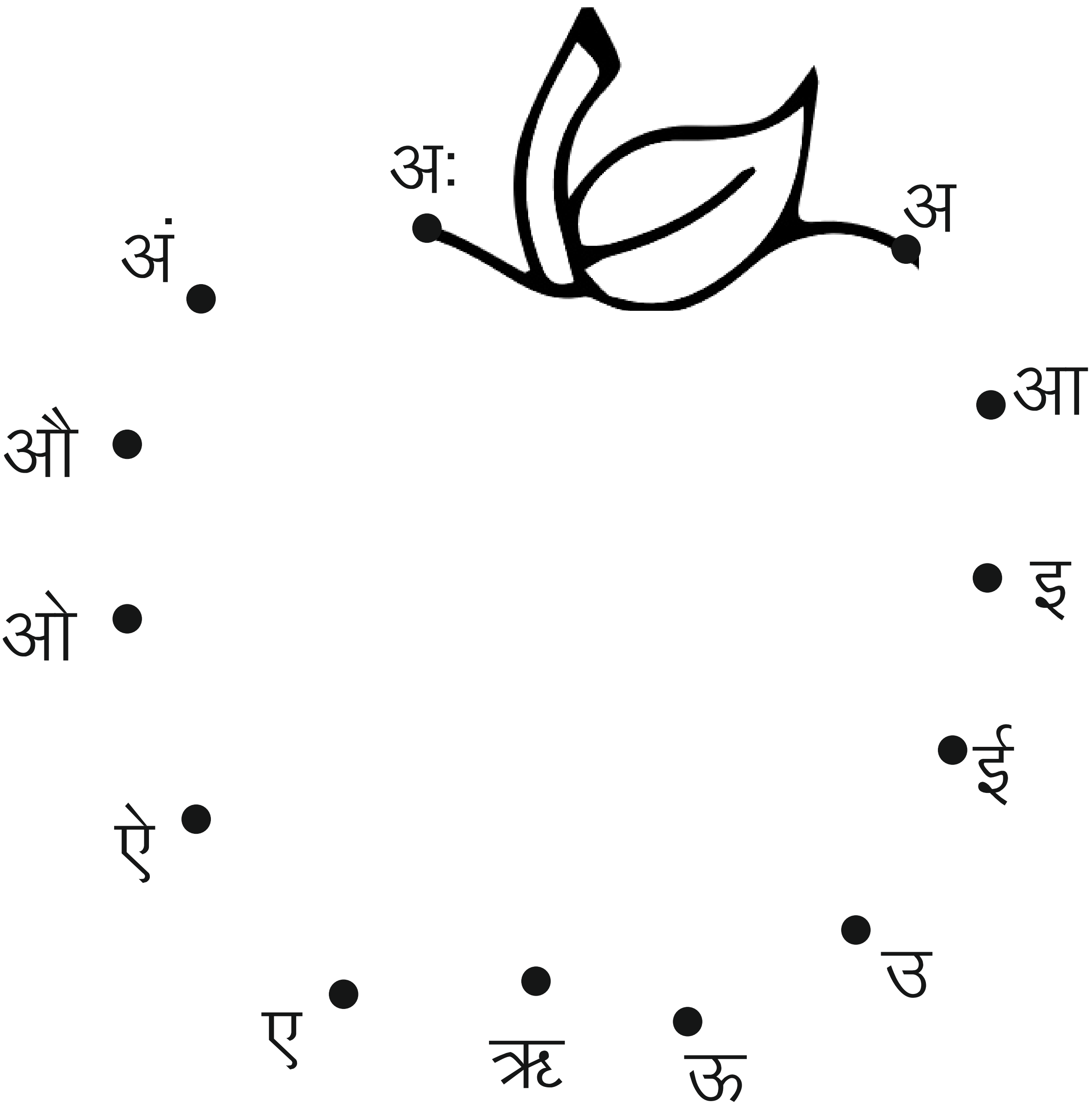

शिक्षण संकेत वर्णों के क्रम के अनुसार बिंदु से बिंदु मिलाकर चित्र को पूरा करवाकर रंग भरवाएँ।

पाठ 4

मीठा आम

कितना मीठा कितना ताजा,
आम फलों का है राजा;
गर्मी के मौसम में आता,
सबके मन को है भाता;
देख के इसको मन ललचाए,
बिन खाए फिर रहा न जाए।

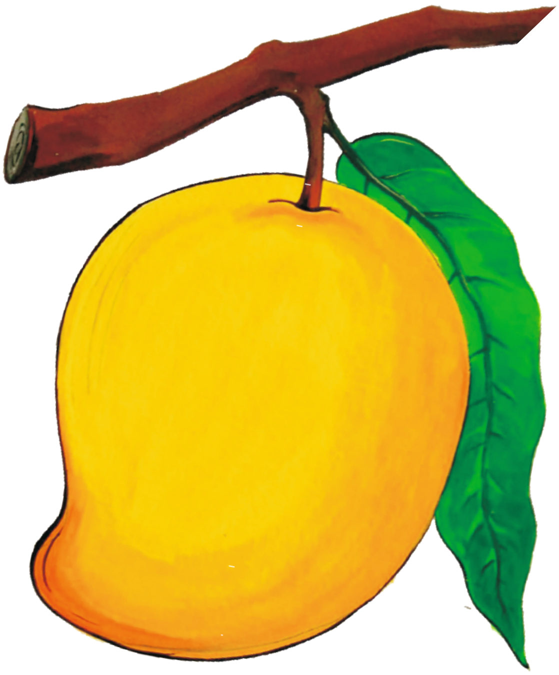

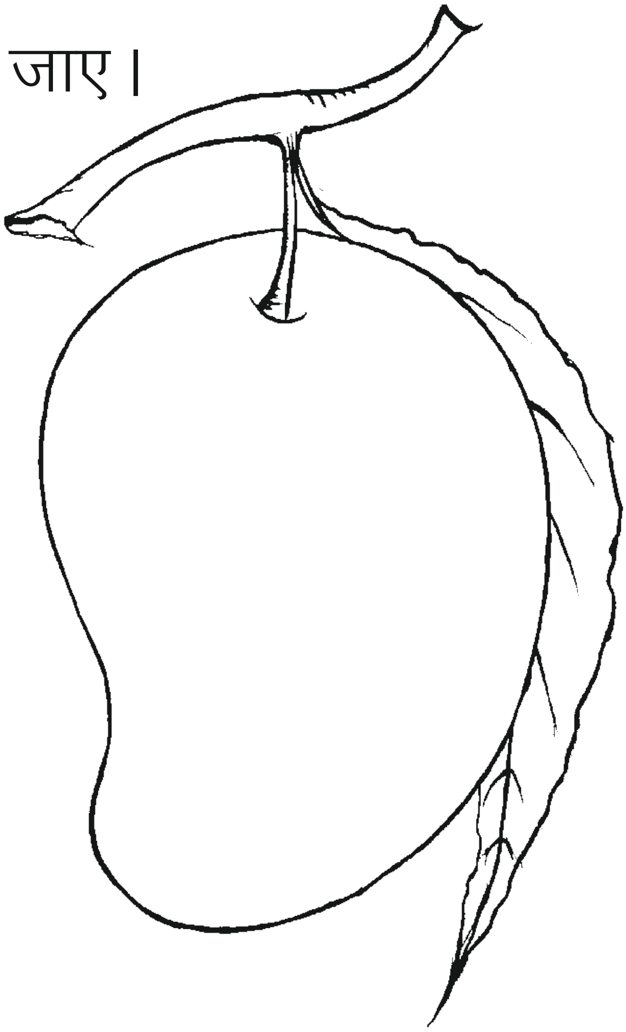

शिक्षण संकेत कविता का सस्वर वाचन कराते हुए आम की पहचान कराएँ तथा आम के चित्र में रंग भरवाएँ।

पाठ 5

सुनो, देखो और पढ़ो

ड और ड़ का प्रयोग

डाल

सड़क

डमरू

भेड़

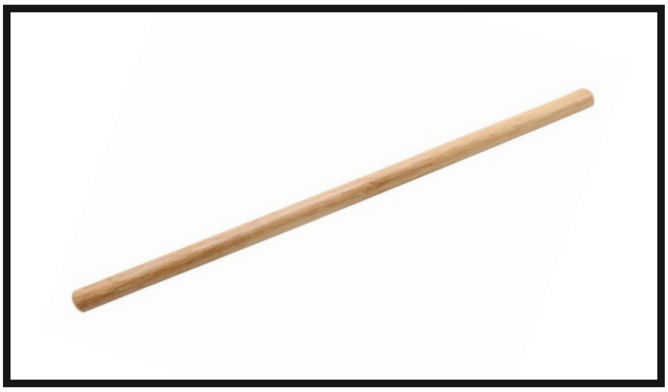

डंडा

पेड़

गतिविधि :– कागज के गिलासों से डमरू बनवाएँ।

ढ और ढ़ का प्रयोग

ढपली

सीढ़ी

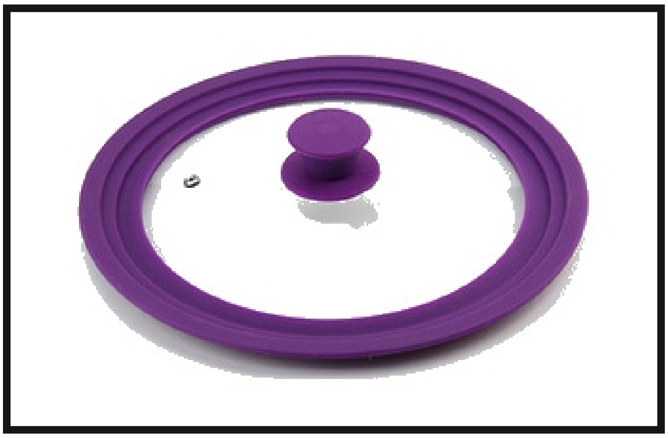

ढक्कन

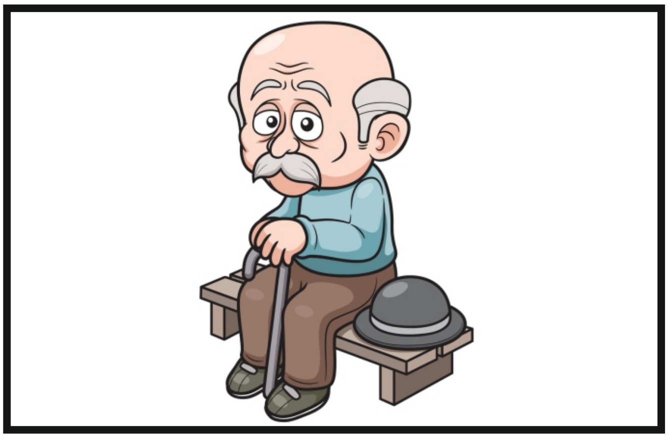

बूढ़ा

ढोलक

बढ़ई

शिक्षण संकेत — ड, ड़, ढ तथा ढ़ की ध्वनियों में अंतर समझाते हुए उच्चारण अभ्यास कराएँ।

सुनो, देखो और पढ़ो

छ और क्ष का प्रयोग

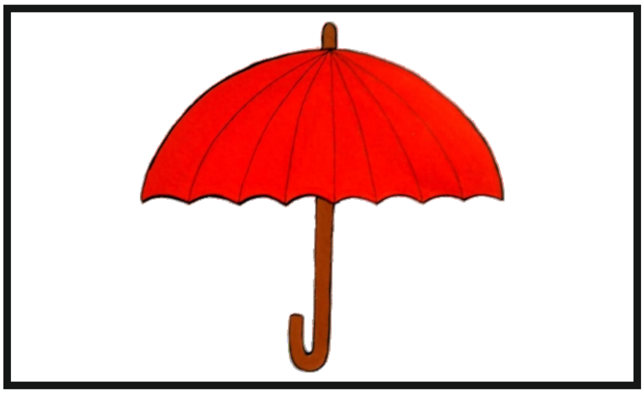

छाता

वृक्ष

छात्र

पक्षी

छड़ी

शिक्षक

शिक्षण संकेत छ और क्ष की ध्वनि में अंतर समझाते हुए उच्चारण अभ्यास कराएँ।

पाठ 6

चूहा और केक

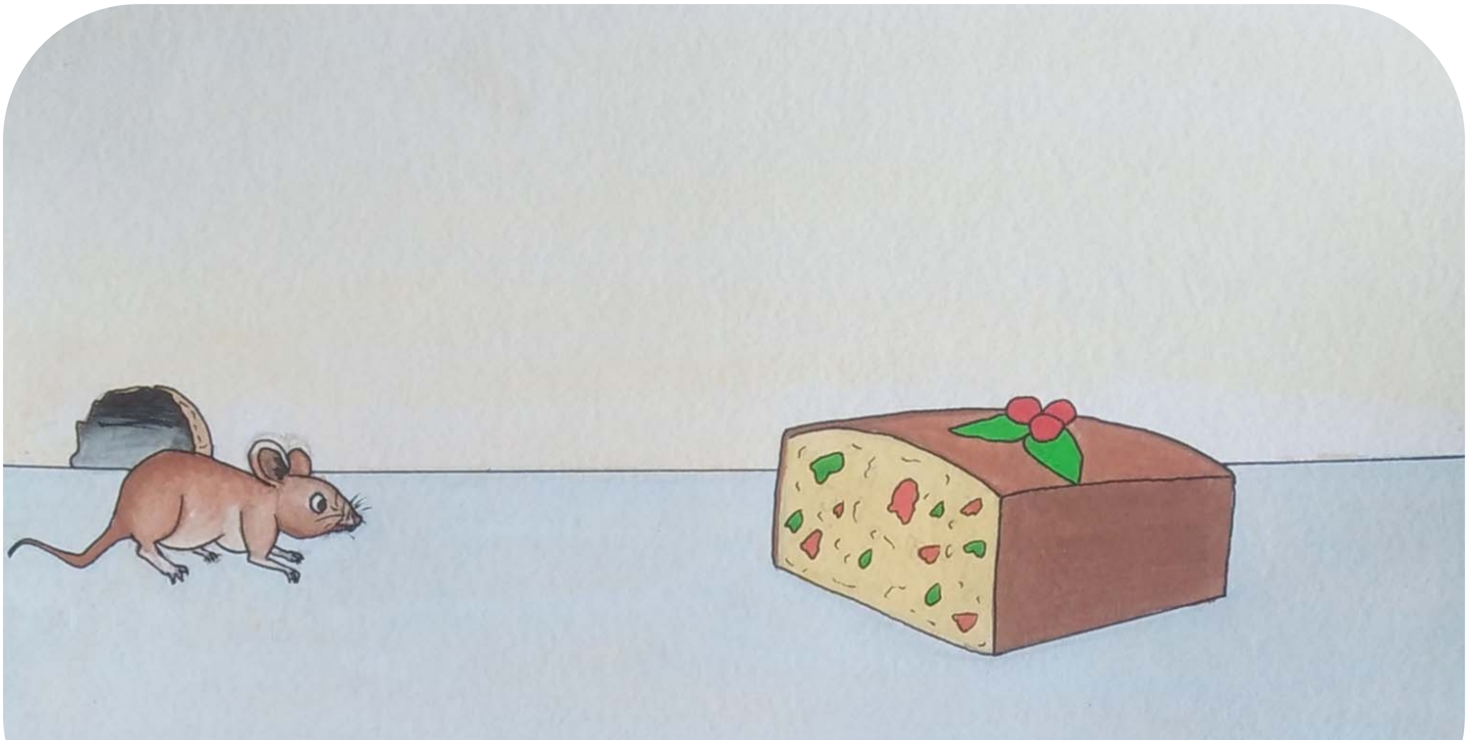

एक दिन एक चूहे को एक बहुत बड़ा केक मिला।

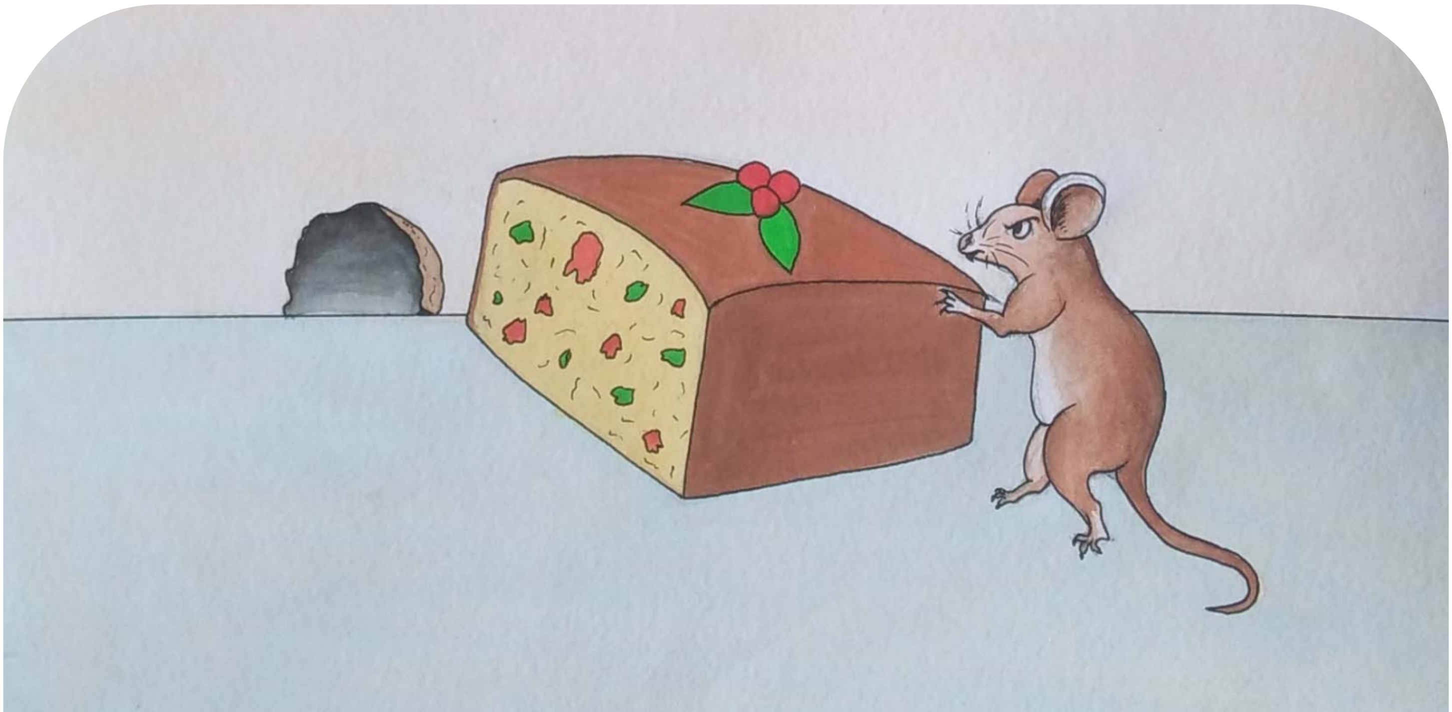

उसने केक को धकेलकर अपने बिल तक ले जाने का बहुत प्रयास किया। लेकिन केक थोड़ा–सा भी नहीं हिला।

उसने सोचा कि केक घर नहीं ले जा सकता तो यहीं खा लेता हूँ। फिर उसने धीरे–धीरे पूरा केक खा लिया।

वह इतना मोटा हो गया कि अपने बिल में ही नहीं घुस पा रहा था। अब वह परेशान था। उसने सोचा कि मैंने अपने साथियों के साथ केक को बाँटकर खाया होता तो ऐसा नहीं होता।

शिक्षण संकेत

शिक्षक वस्तुओं को साझा करने के लिए प्रेरित करें।

पाठ 7

पढ़ो और लिखो

आ (ा) की मात्रा

हाथ ______ ______ ______

कान ______ ______ ______

ताला ______ ______ ______

गाजर ______ ______ ______

गमला ______ ______ ______

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
आ' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

इ (ि) की मात्रा

सिर

पिता

खटिया

माचिस

चिड़िया

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'इ' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

ई (ी) की मात्रा

घड़ी

जीभ

दीपक

बकरी

मछली

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'ई' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

मिलान करो

‘क’	‘ख’
पिता	हाथ
ताला	बकरी
मछली	ताला
हाथ	पिता
बकरी	मछली

शिक्षण संकेत स्तम्भ ‘क’ के शब्दों का स्तम्भ ‘ख’ के शब्दों से मिलान कराएँ।

करके सीखो

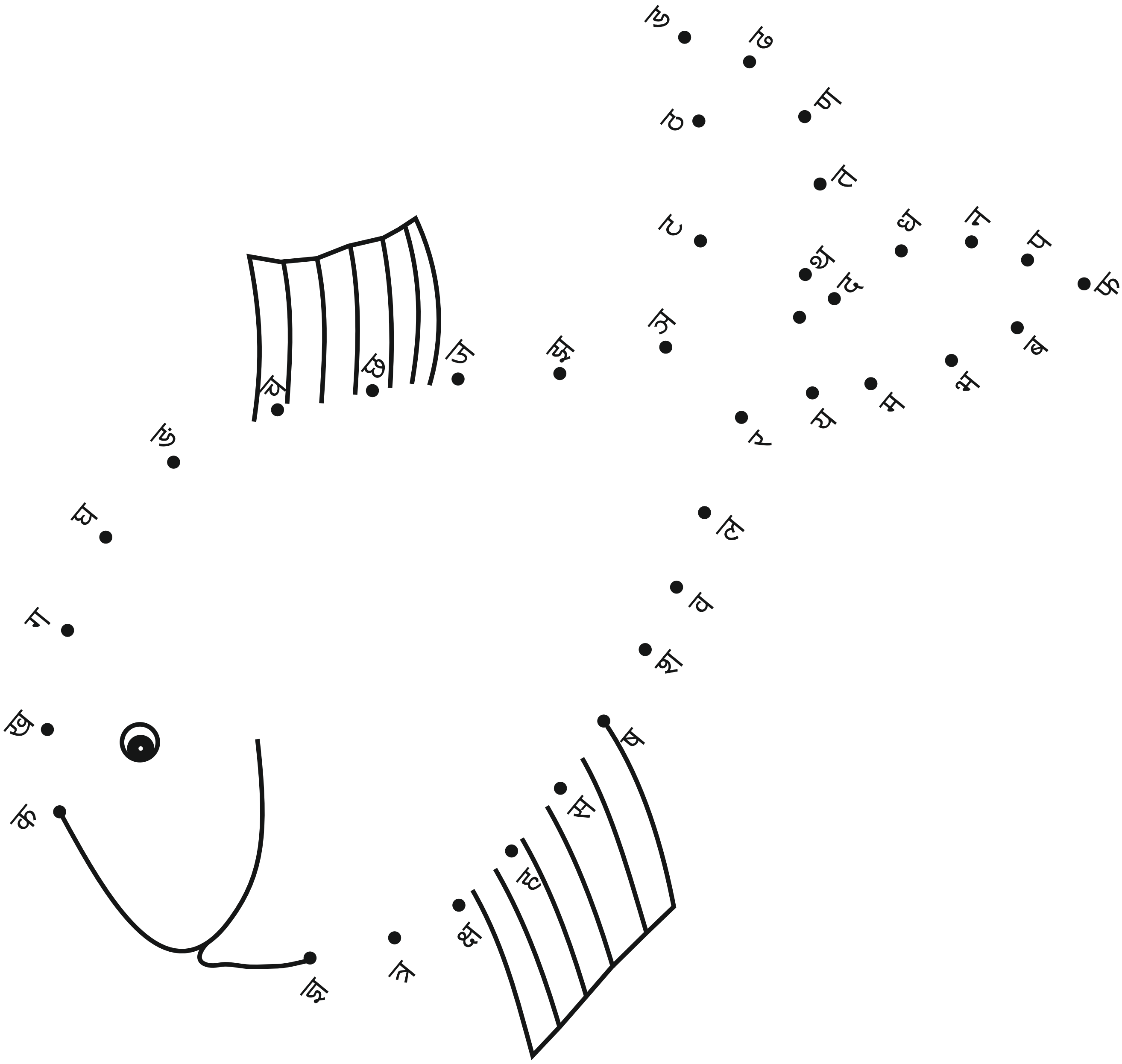

शिक्षण संकेत वर्णों के क्रम के अनुसार बिंदु से बिंदु मिलाकर चित्र को पूरा करवाकर रंग भरवाएँ।

पाठ 8

जानें इनकी बोली

श्याम चिरैया चूँ–चूँ–चूँ
मोती पिल्ला कूँ–कूँ–कूँ
चिड़िया चें–चें
बकरी में–में
कुत्ता भौं–भौं
मोटर पों–पों
घोड़ा हिन–हिन
मक्खी भिन–भिन
कहे कबूतर– गुटरू गूँ
मुर्गा बोले– कुकड़ू कूँ।।

शिक्षण संकेत

कविता का हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन कराएँ और विभिन्न पशु–पक्षियों आदि की आवाज की पहचान कराएँ।

पाठ 9

पढ़ो और लिखो

उ (ु) की मात्रा

सुई ____ ____ ____

कछुआ ____ ____ ____

दुकान ____ ____ ____

सुराही ____ ____ ____

चुहिया ____ ____ ____

शिक्षण संकेत
दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'उ' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

ऊ (ू) की मात्रा

चूहा

जूता

दूध

झूला

नाखून

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'ऊ' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

ऋ (ृ) की मात्रा

वृक्ष ______ ______ ______

ऋषि ______ ______ ______

गृह ______ ______ ______

कृषक ______ ______ ______

मृदंग ______ ______ ______

शिक्षण संकेत — दिये गये शब्दों को पढ़ने तथा लिखने का अभ्यास कराएँ।

ए (े) की मात्रा

सेब ______ ______ ______

तेल ______ ______ ______

शेर ______ ______ ______

बेलन ______ ______ ______

जलेबी ______ ______ ______

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'ए' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

ऐ (ै) की मात्रा

पैसा ________ ________ ________

मैदा ________ ________ ________

थैला ________ ________ ________

बैंगन ________ ________ ________

सैनिक ________ ________ ________

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'ऐ' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

मिलान करो

जूता

रुपया

बैंगन

दुकान

चूहा

जलेबी

शिक्षण संकेत दिये गये शब्दों को पढ़वाएँ तथा स्तम्भ 'क' के चित्रों को स्तम्भ 'ख' के शब्दों से मिलान करवाएँ।

रंग भरो

शिक्षण संकेत

चित्र में रंग भरवाएँ।

पाठ 10

उपकार

रामू एक दिन बगीचे की तरफ जा रहा था। रास्ते में उसे एक घायल नेवला मिला। रामू नेवले को उठाकर घर ले आया और उसकी चोट पर दवा लगाई। नेवला ठीक हो गया। रामू ने उसे बगीचे में वापस छोड़ दिया।

एक दिन जब रामू स्कूल से लौट रहा था, थक जाने के कारण वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। पेड़ के पीछे से निकल कर एक साँप रामू की ओर लपका। पास ही मौजूद नेवले ने उसे देख लिया। नेवला साँप से भिड़ गया और साँप को मार डाला।

आवाज सुनकर रामू का ध्यान उस ओर गया। उसने देखा कि किस तरह नेवले ने उसकी जान बचाई। रामू ने नेवले को धन्यवाद दिया।

शिक्षण संकेत

हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएँ। कहानी के आधार पर खुले छोर के प्रश्न पूछें।
जैसे – रामू नेवले को वापस न छोड़कर और क्या कर सकता था ? और क्यों ?

पाठ 11

पढ़ो और लिखो

ओ (ो) की मात्रा

मोर

टोपी

होली

कोयल

बोतल

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'ओ' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

औ (ौ) की मात्रा

कौआ

मौसी

औरत

खिलौना

चौखट

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
'औ' की मात्रा वाले अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

पाठ 12

शरीर के अंग

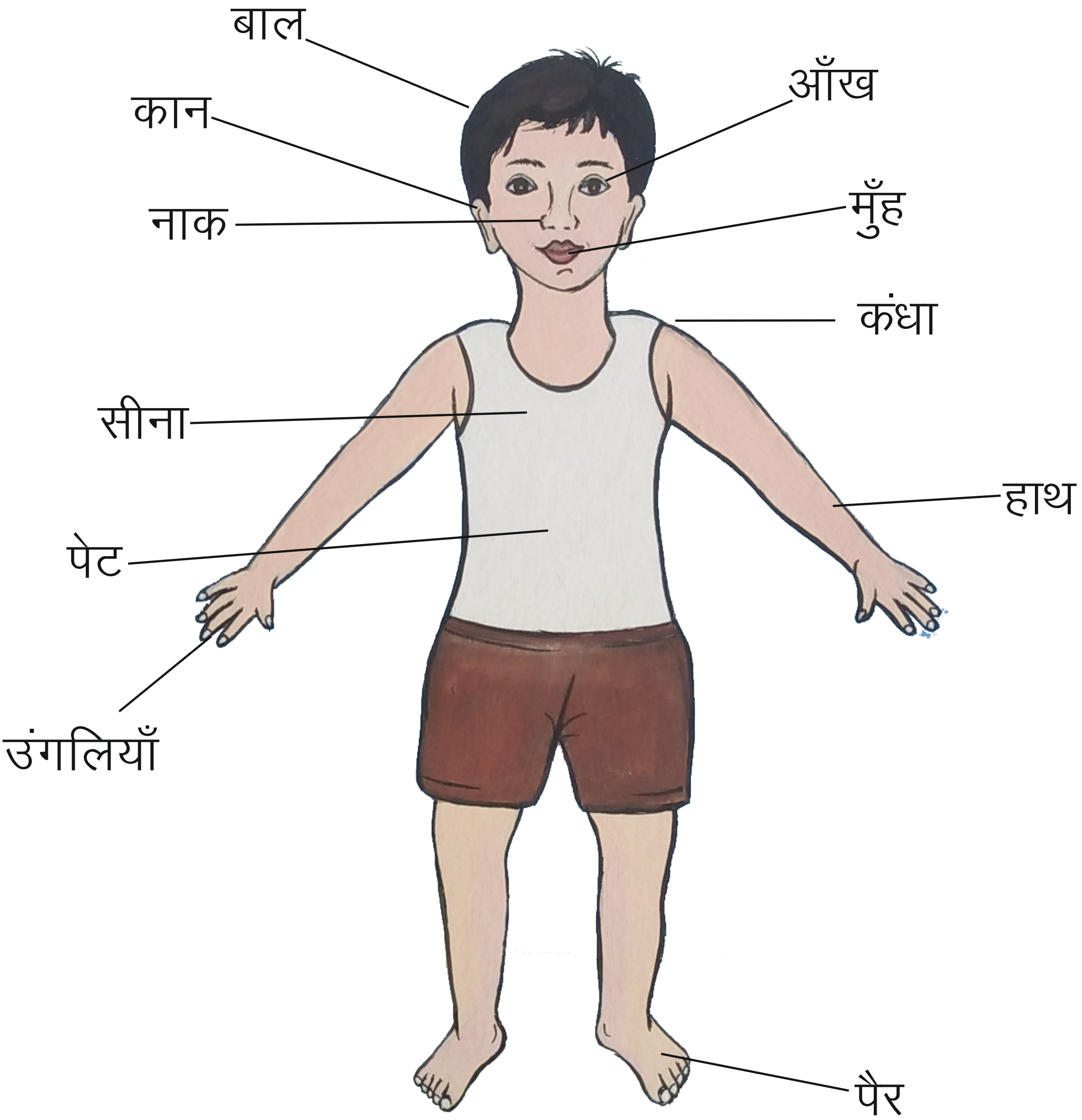

शिक्षण संकेत

बच्चों को शरीर के अंगों के नामों से परिचित कराएँ तथा बार–बार बोलने का अभ्यास कराएँ।

पाठ 13

चालाक लोमड़ी

एक बार जंगल में एक भूखी लोमड़ी घूम रही थी। उसे एक कौआ दिखा, जिसके मुँह में रोटी का एक टुकड़ा था। उसे एक तरीका सूझा। उसने कौए से कहा, ''सुना है तुम बहुत अच्छा गाना गाते हो। मुझे भी एक गाना सुना दो।''

कौआ यह सुनकर खुश हो गया। जैसे ही उसने गाने के लिए चोंच खोली, रोटी का टुकड़ा गिर गया। लोमड़ी ने तुरंत वह टुकड़ा उठाया और लेकर भाग गई। कौआ देखता ही रह गया।

शिक्षण संकेत

- चित्रों को दिखाते हुए कहानी सुनाएँ।
- बच्चों को कहानी अपने शब्दों में सुनाने का अवसर दें।
- कहानी पर आधारित कुछ छोटे–छोटे प्रश्न पूछें।

पाठ 14

पढ़ो और लिखो

अनुस्वार (ं) का प्रयोग

अंडा

घंटा

बंदर

कंगन

मंजन

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ। अनुस्वार युक्त अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

विसर्ग (:) का प्रयोग

प्रातः

नमः

दुःख

अतः

पुनः

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को बोलने और लिखने का अभ्यास कराएँ।
विसर्ग युक्त अन्य शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

मिलान करो

टोपी	मंजन
खिलौना	बोतल
प्रातः	टोपी
बोतल	कौआ
मंजन	खिलौना
कौआ	प्रातः

शिक्षण संकेत

दिये गये शब्दों को पढ़वाएँ तथा स्तम्भ 'क' के शब्दों का स्तम्भ 'ख' के समान शब्दों से मिलान करवाएँ।

हमने सीखा

खाली स्थान भरो–

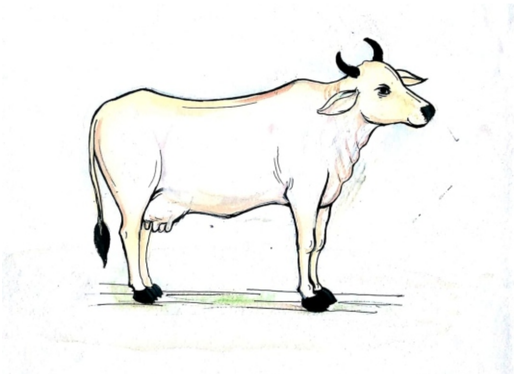

गा____

घ____

ना____

सू____ज

म___ली

पतं___

चू___

गि___स

ग___ला

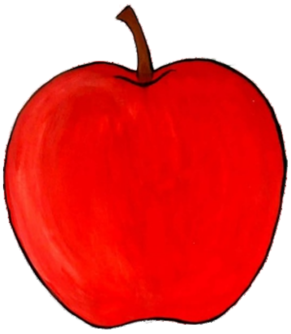

से___

मो___

छा___

शिक्षण संकेत

रिक्त स्थान में उचित वर्ण भरवाकर शब्दों का उच्चारण अभ्यास कराएँ।

पाठ 15

दिनों के नाम

सोमवार

मंगलवार

बुधवार

गुरूवार

शुक्रवार

शनिवार

रविवार

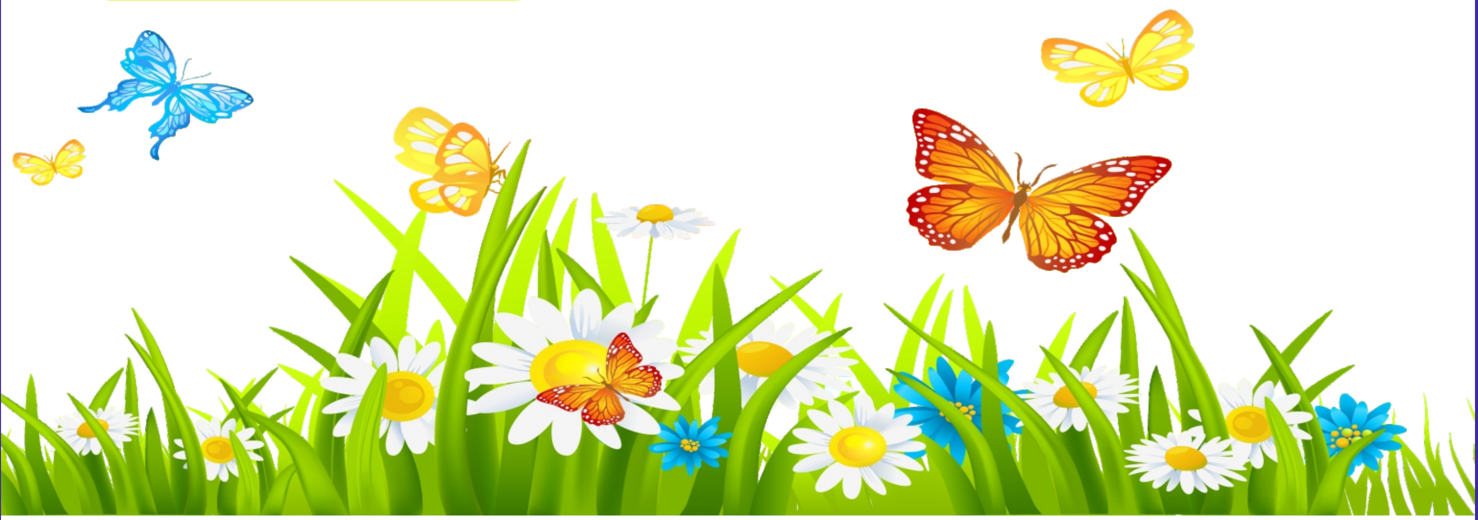

शिक्षण संकेत बच्चों से दिनों के नाम बुलवाएँ।

मिलान करो–

सोमवार	बुधवार
मंगलवार	शनिवार
बुधवार	सोमवार
गुरुवार	मंगलवार
शुक्रवार	रविवार
शनिवार	गुरुवार
रविवार	शुक्रवार

शिक्षण संकेत — बच्चों से दिनों के नाम का मिलान कराएँ।

पाठ 16

रास्ता खोजो

बिल्ली को दूध की कटोरी तक पहुँचाओ

शिक्षण संकेत

बच्चों से चित्र के बारे में बात–चीत करें।

देखो और बोलो

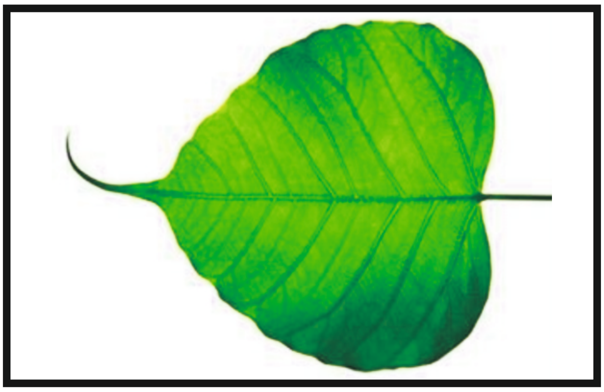

पत्ता

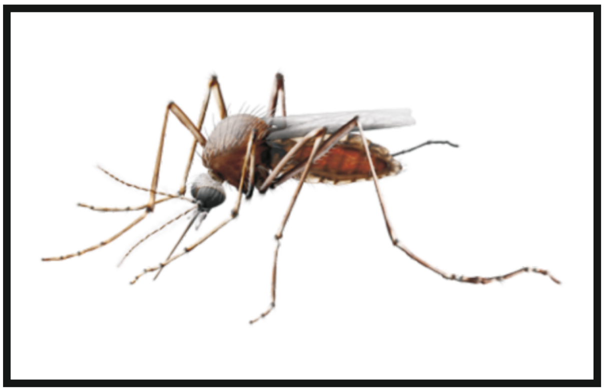

मच्छर

गुब्बारा

चम्मच

चप्पल

बल्ला

शिक्षण संकेत चित्र दिखाकर शब्दों का उच्चारण अभ्यास एवं उनकी पहचान कराएँ।

अंतर ढूँढो

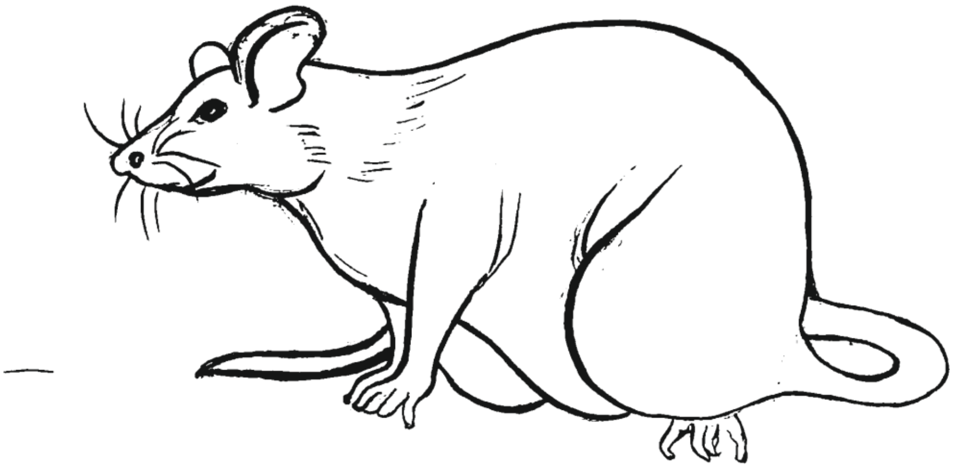

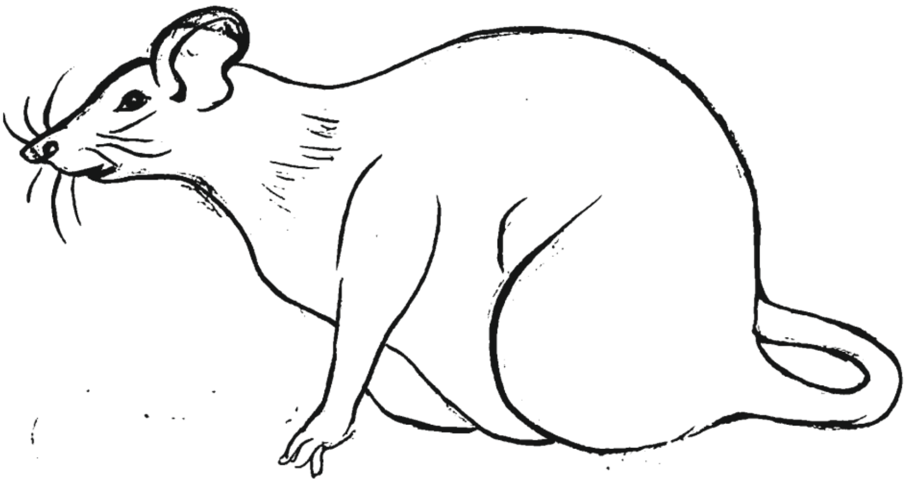

शिक्षण संकेत

बच्चों से दोनों चित्रों में अंतर ढूँढने को कहें, चर्चा के बाद अंतर वाली जगहों पर गोला बनवाएँ।

पाठ 17

खेल–खेल में

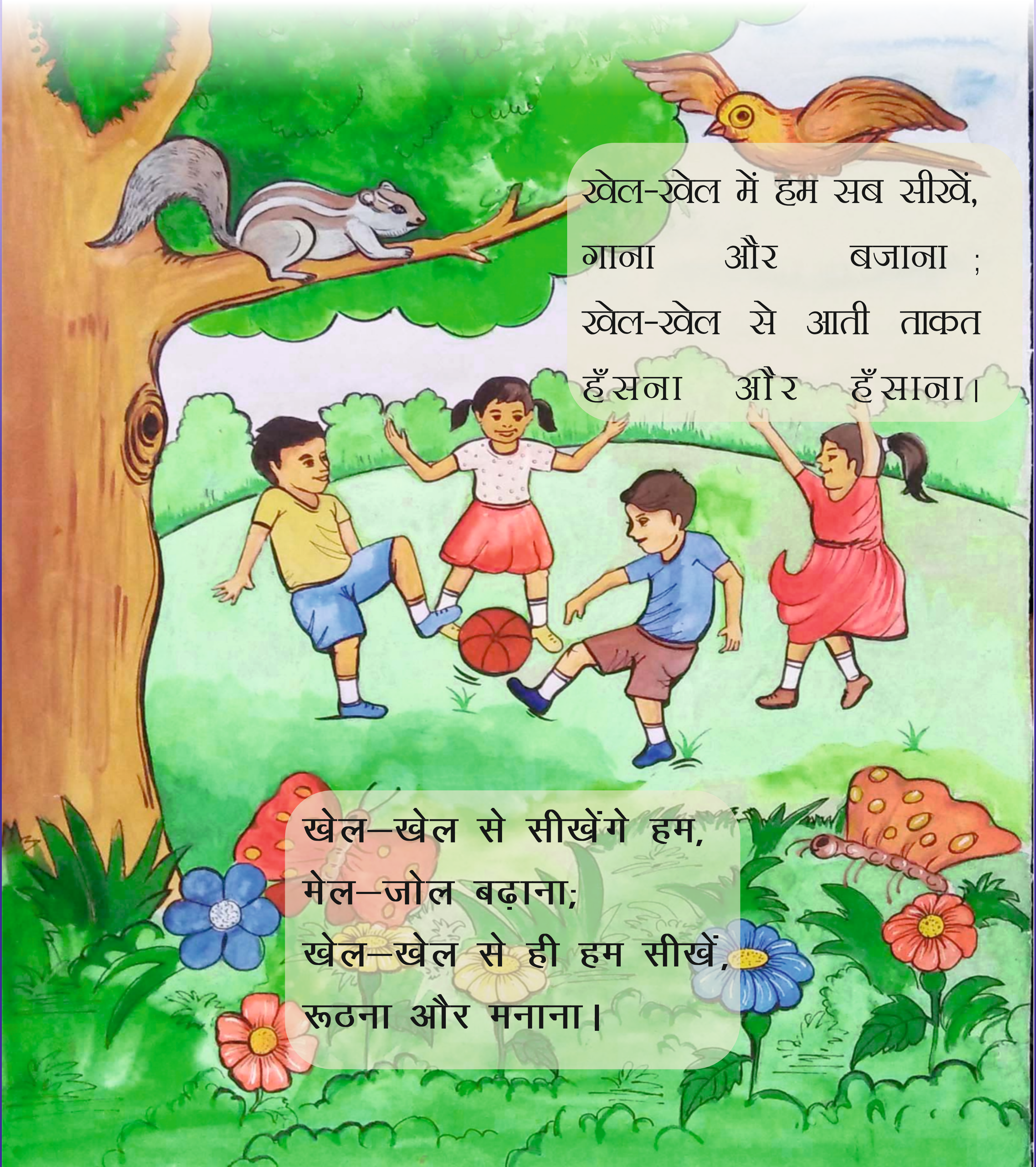

खेल-खेल में हम सब सीखें,
गाना और बजाना ;
खेल-खेल से आती ताकत
हँसना और हँसाना।

खेल–खेल से सीखेंगे हम,
मेल–जोल बढ़ाना;
खेल–खेल से ही हम सीखें,
रूठना और मनाना।

शिक्षण संकेत

हाव–भाव के साथ कविता का सस्वर वाचन कराएँ साथ ही खेल और व्यायाम के महत्त्व पर चर्चा करें।

पाठ 18

मेढक और चूहा

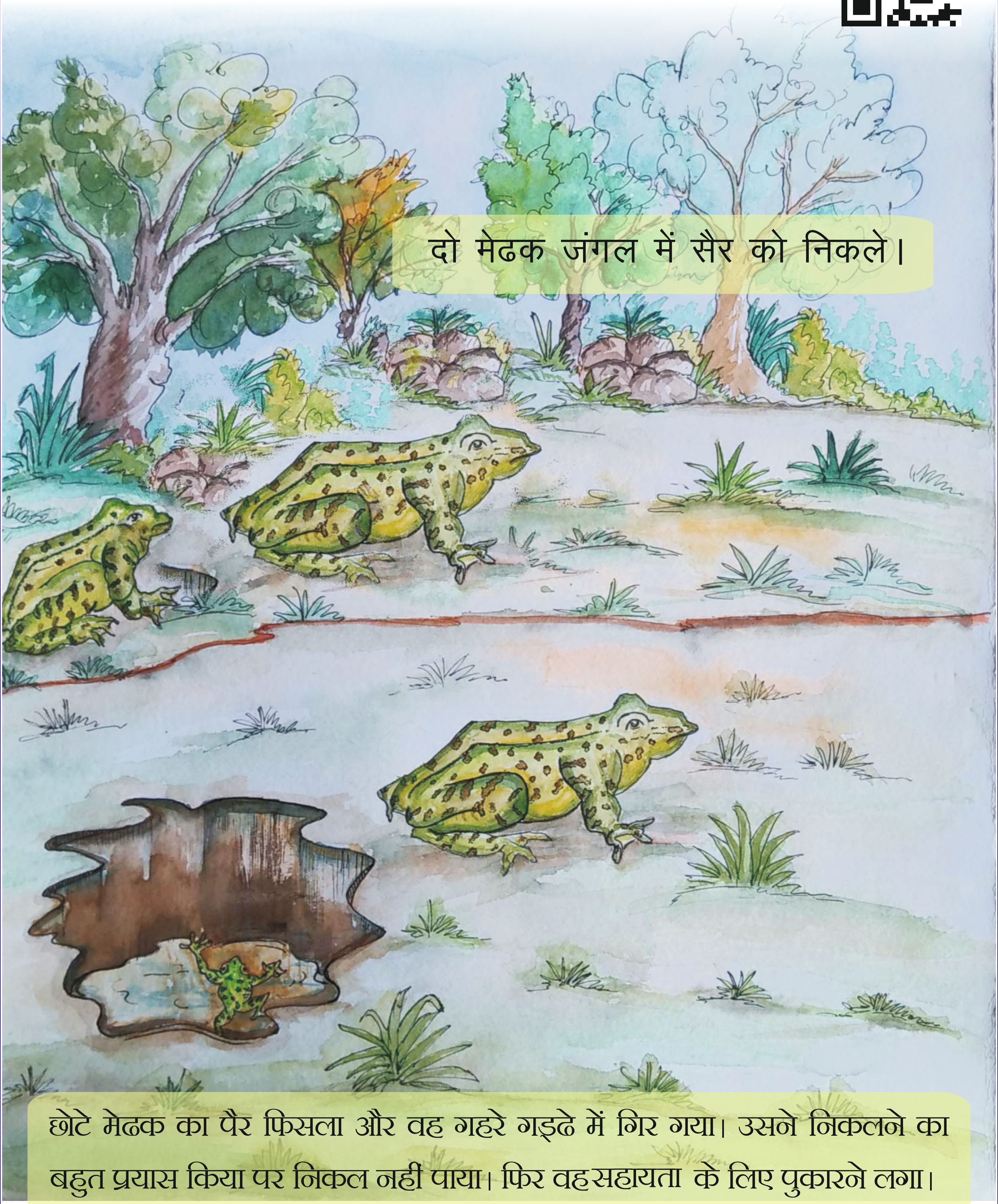

दो मेढक जंगल में सैर को निकले।

छोटे मेढक का पैर फिसला और वह गहरे गड्ढे में गिर गया। उसने निकलने का बहुत प्रयास किया पर निकल नहीं पाया। फिर वहसहायता के लिए पुकारने लगा।

उसकी पुकार सुनकर एक चूहा वहाँ आया और एक बिल खोदने लगा। खोदते-खोदते चूहे ने गड्ढे से पास के तालाब तक एक बिल बना दिया।

जिससे गड्ढे में पानी भर गया और छोटा मेढक तैर कर बाहर ak

शिक्षण संकेत

कहानी पर बच्चों से चर्चा करें और बताएँ कि हमें एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

कुछ करने को

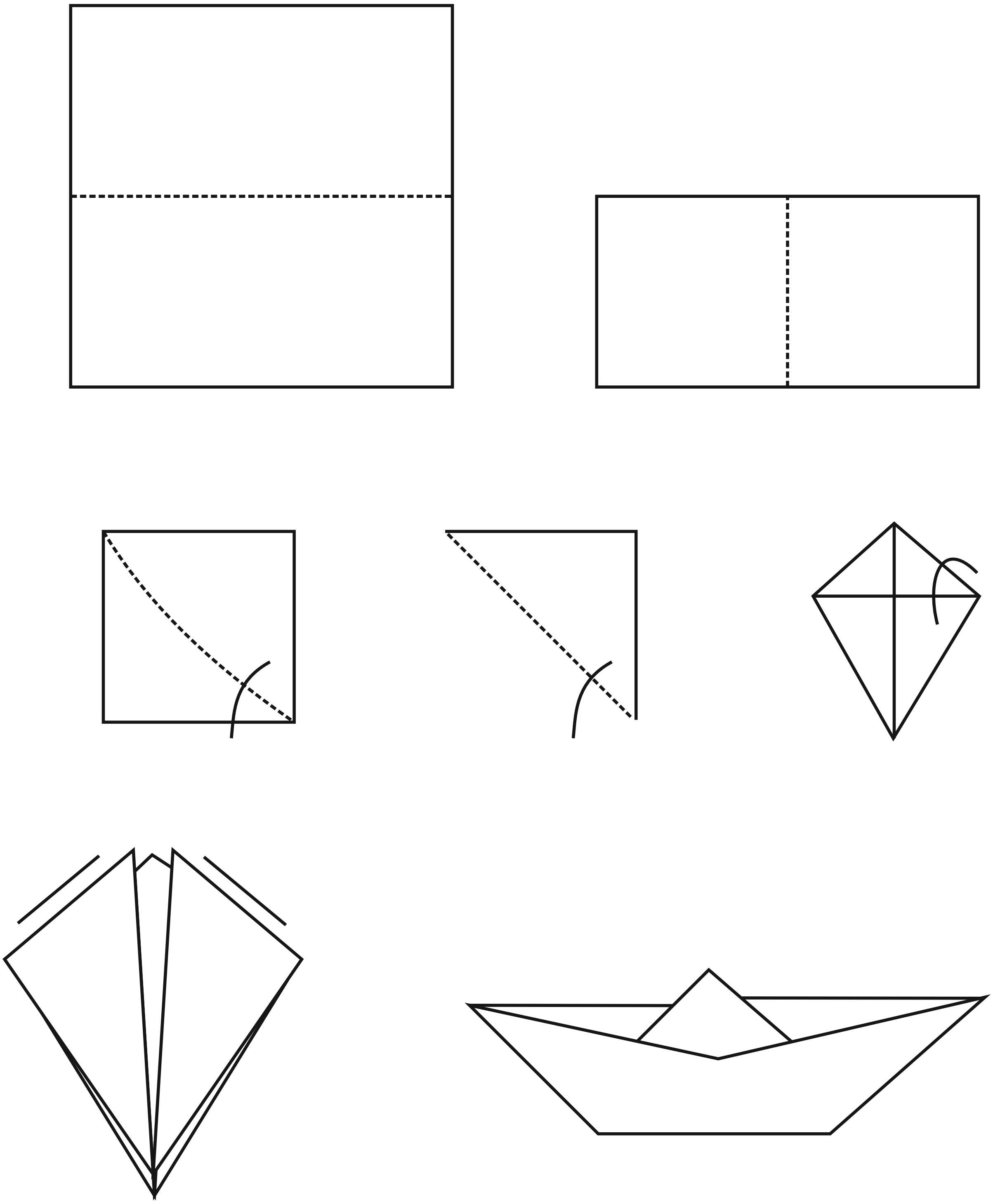

राष्ट्रगान

जन–गण–मन अधिनायक, जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
पंजाब–सिंध–गुजरात–मराठा–
द्राविड़–उत्कल बंग
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा
उच्छल–जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन–गण–मंगल दायक जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे!

सत्र 2020-2021

आवरण पृष्ठ की विशिष्टियाँ–

आवरण पृष्ठ के कागज का विशिष्टिकरण : प्रयुक्त कागज वर्जिन पल्पयुक्त 175 जी0एस0एम0 का आर्ट पेपर का प्रयोग किया गया है। जिसमें कागज का बर्स्ट इण्डेक्स–न्यूनतम 0.9,वैक्स पिक्स–नो पिक्स ऑन 5ए, ग्लास परसेंट–न्यूनतम 55, ब्राइटनेस न्यूनतम 72 प्रतिशत और सरफेस पी0एच0 5.5 से 8.0 है। कागज की अन्य विशिष्टियों बी0आई0एस0 कोड आई0एस0–4658–1988 के अनुसार है, एवं कागज 53.34 सेमी0X78.74 सेमी है। आवरण पृष्ठ का बाहरी भाग चार रंगों तथा अन्दर का भाग एक रंग में मुद्रित है।

उ0 प्र0 बेसिक शिक्षा परिषद्

निःशुल्क वितरण हेतु